11

असाज़्प्रदायिक मसीहियतः

किस का (में) बपतिस्मा?

हमने पिन्तेकुस्त के दिन सुसमाचार की सबसे पहली असाज़्प्रदायिक सभा में पतरस की शिक्षा पर ही विचार किया है, लेकिन यह विचार हमने इसलिए नहीं किया कि इस विषय पर केवल एक ही शिक्षा है। प्रेरितों 2 अध्याय में पाई जाने वाली बातों से भी अधिक स्पष्ट आयतें होंगी। हमने सबसे पहली सुसमाचार सभा में सिखाई गई बातों पर विचार इसलिए किया है ज़्योंकि यह प्रेरितों को सारी सच्चाई में अगुआई देने के लिए परमेश्वर की प्रेरणा के लिए पवित्र आत्मा का पहला काम था।

हमें बपतिस्मे के सबसे अधिक विवादास्पद विषय पर मूल शिक्षा को सावधानी से समझने की आवश्यकता है। सब भले मन वाले लोगों को यह देखने की आवश्यकता है कि इस विषय पर फूट होने का कोई कारण नहीं है। हम देखेंगे कि ज़्या पतरस ने इस सुसमाचार सभा में निश्चय ही यह बताकर कि यीशु को प्रभु बनाया गया है पापों की क्षमा, मन फिराने और बपतिस्मा लेने के लिए कहा। बेशक खोए हुए किसी पापी के लिए क्षमा पाने की स्वर्गीय शर्तों के सज़्बन्ध में यह चर्चा यहीं समाप्त हो जानी चाहिए। विशेषतया इसमें यह संदेह नहीं रहना चाहिए ज़्योंकि इन उपदेशकों को सारे संसार में यरूशलेम से आरज़्भ करके सब जातियों में मन फिराने और पापों की क्षमा का प्रचार करने की आज्ञा दी गई थी (प्रेरितों 1:8) और उन्हें स्वर्ग से पवित्र आत्मा पहनाया गया था। यीशु ने उन्हें उनके काम में अगुआई देने के लिए ईश्वरीय सामर्थ के आने तक ''ठहरने'' के लिए कहा था, ताकि वे बिना कोई गलती किए उस काम को सही ढंग से कर पाएं (लूका 24:46-49)। यदि इन उपदेशकों ने अपने प्रभु के आदेशों का पालन किया था, अर्थात उन्होंने यरूशलेम से आरज़्भ करने में उनकी अगुआई के लिए पवित्र आत्मा के आने की प्रतीक्षा वहां रहकर की थी (इनमें से किसी भी बात पर संदेह नहीं किया जाना चाहिए), तो उनके द्वारा किया गया काम बिल्कुल सही है और उसमें गलती की कोई गुंजाइश नहीं हो सकती।

यदि पतरस ने लोगों को पापों की क्षमा पाने के लिए कहा था, जिसके लिए उसे भेजा गया था, तो निश्चय ही उसने वे शर्तें बताई होंगी जिनसे किसी को क्षमा मिल सकती थी। इसलिए यदि आत्मा ने अपना पाप मान चुके लोगों को क्षमा के लिए यरूशलेम की इस सुसमाचार सभा में मन फिराने और बपतिस्मे की शर्तें बताई थीं, तो यह इच्छा और शिक्षा

परमेश्वर की है अर्थात यह स्वर्ग से दी गई है। इसी लिए हमने इस काम पर विचार किया है। पवित्र आत्मा के सीधे निर्देशन में पतरस ने लोगों को बपतिस्मा लेने की आज्ञा दी ताकि उन्हें क्षमा किया जा सके। यह सच्चाई तथ्य की तरह है कि उसने ये सब बातें कीं, जिसकी भाषा की व्याज़्या संसार के विद्वान करते हैं। मैंने निष्कपट मन वाले हर व्यज़्ति को समझाने की बड़ी कोशिश की है। इसकी भाषा की सच्चे मन से परख करने के बाद केवल विद्रोही मन ही इसे मानने से इन्कार करके इससे अलग हो सकता है।

अब जबकि यह स्पष्ट हो चुका है कि पतरस ने उस पहली सुसमाचार सभा में ज़्या सिखाया था, तो मेरे लिए यह पूछना आवश्यक है, कि ज़्या इस विषय पर पतरस की शिक्षा आत्मा की शिक्षा से मेल खाती है? इस प्रश्न में ही इसका उज़र है। पतरस की शिक्षा किसी भी बात पर पवित्र आत्मा की शिक्षा के विरुद्ध होती तो पापों की क्षमा का प्रचार करने वाला एक अच्छा विश्वासी नहीं हो सकता था। इसलिए यरूशलेम में दिया गया उसका उपदेश आत्मा की हर शिक्षा के साथ मेल खाने वाला होना आवश्यक है।

यरूशलेम की इस सुसमाचार सभा से थोड़ी देर पहले, पतरस और अन्य प्रेरितों को इस महान कार्य के लिए प्रभु की ओर से आदेश मिले थे। पतरस यरूशलेम की इस सुसमाचार सभा में इन्हीं आदेशों का पालन कर रहा है। वे आदेश ज़्या थे? मज़ी की पुस्तक के अनुसार, वे आदेश इस प्रकार थे:

> स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुज़्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ: और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुज़्हारे संग हूं (मज़ी 28:18-20)।

मज़ी ने इन आज्ञाओं को इसी तरह लिखा और यदि पतरस ने पिन्तेकुस्त के दिन उनका पालन नहीं किया तो वह एक अविश्वासी प्रचारक था। यदि उसने बपतिस्मे के सज़्बन्ध में कुछ भी ऐसा सिखाया जो इन आज्ञाओं से मेल नहीं खाता था तो पतरस को परमेश्वर की प्रेरणा प्राप्त प्रचारक मानना गलत है।

इसके विपरीत, पिन्तेकुस्त के दिन होने वाली सुसमाचार सभा में पतरस ने अपने सुनने वालों को यीशु, उसके जीवन, उसकी मृत्यु, उसके पुनरुत्थान और पिता के दाहिने हाथ उसके राज्याभिषेक का ऐलान किया। उसने उन्हें बताया कि परमेश्वर ने क्रूस पर चढ़ाए गए यीशु को प्रभु भी बना दिया है और मसीह भी। वे लोग जो यीशु के बारे में इन सब बातों को जानते थे, बिना किसी संदेह के यीशु के चेले या अनुयायी बन गए थे। परन्तु पवित्र पुस्तक के रिकॉर्ड के मुताबिक, चेले बनाने के बाद, प्रेरितों ने इन लोगों को किसी ''में'' या ''का'' बपतिस्मा देना था। स्पष्टतया, बपतिस्मे से पहले ये चेले उस किसी ''में'' या ''के'' नहीं थे, यह किसी कुछ भी हो सकता है। वरना, सुसमाचार के ये पवित्र प्रचारक, उन्हें इस ''में'' (या का) बपतिस्मा नहीं दे सकते थे।

यहां पर मैं फिर इस पर सावधानी से विचार करने के लिए कहता हूं, ज़्योंकि सब कुछ

धीरे-धीरे और विश्वासपूर्वक सोच विचार पर निर्भर करता है। पृथ्वी पर ये हमारे प्रभु की सदा रहने वाली आज्ञाएं हैं। इन चेलों ने जिस ''में'' (या का) भी बपतिस्मा लेना था, उसी ''में'' (या का) हर चेले को बपतिस्मा लेना आवश्यक है ज़्योंकि बपतिस्मा लिए बिना कोई उस ''में'' नहीं आ सकता या उसका नहीं हो सकता। वह कुछ ज़्या था जिस ''में'' (या का) पतरस और दूसरे प्रेरितों ने चेलों को बपतिस्मा देना था? ''उन्हें पिता पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा'' देने की ईश्वरीय आज्ञा मिली थी। बपतिस्मे से पहले, इन प्रचारकों द्वारा बनाए गए चेले पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बाहर थे, परन्तु बपतिस्मा लेकर वे इस में आ गए। ज़्या कोई परमेश्वर के परिवार के ''नाम'' से बाहर रहकर उसके परिवार में या उसकी संतान हो सकता है? ज़्या वह परिवार का हुए बिना अर्थात पिता का नाम पहने बिना पिता की आशिषों का वारिस हो सकता है?

एक युवक और युवती के विवाह की कल्पना करें। मान लें कि युवक का नाम जोन्स है और युवती का नाम स्मिथ। यह युवती इस युवक से शायद कई महीनों से प्रेम करती है, लेकिन उन्होंने अभी तक विवाह नहीं किया है। वह अभी तक कुमारी स्मिथ कहलाती है; परन्तु विवाह समारोह में कुछ शज़्द कहने से उसका उस युवक से विवाह हो जाता है। इतनी बात से और उसी समय, वह पिता के और पुत्र के नाम ''में'' आ जाती है (या की हो जाती है) अर्थात इसके बाद वह भी ''जोन्स'' कहलाती है। उसे ''जोन्स'' नाम मिल जाता है और वह जोन्स परिवार की सज़्पज़ि की वारिस बन जाती है। इसी प्रकार प्रेरितों को संसार में पापियों को मसीह के साथ मिलाने में अगुआई करने के लिए भेजा गया था, ताकि वे ''उस दूसरे के हो जाएं, जो मरे हुओं में से जी उठा'' (रोमियों 7:4), और परमेश्वर के लिए फल लाएं। मसीह के साथ उनका विवाह कब हुआ था: पिता और पुत्र के नाम में आने से पहले, या इसमें आने के बाद? वे उस परिवार अर्थात परमेश्वर के परिवार में कब शामिल हुए थे: पुत्र के साथ विवाह से पहले, या विवाह के बाद? मज़ी 28:19 कहता है, ''... उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो।'' इस बात में किसे संदेह हो सकता है कि इन लोगों को जिन्हें ईश्वरीय प्रबन्ध के अनुसार यीशु के चेले बनाया गया था, ईश्वरीय नाम में (या से) बपतिस्मा लेकर परमेश्वर के परिवार में संतान बनना था?

पिन्तेकुस्त के दिन, पतरस ने ऊपर से आदेश पाकर, विश्वासी, शोकित, पश्चाज़ापी मन वाले, मसीह के नये चेलों को पापों की क्षमा ''के लिए'' (*eis*) बपतिस्मा लेने के लिए कहा। उसने उसी शज़्द का इस्तेमाल किया जिसका इस्तेमाल यह आज्ञा देते समय हमारे उद्धारकर्ज़ा ने किया था, जो इस बात का विशेष रूप से संकेत है कि उन्हें किस ''लिए'' बपतिस्मा लेना था।

अंग्रेज़ी भाषा में इस वाज़्य रचना में अन्तर केवल इतना ही है कि यहां कर्म *eis* के बाहर है। मसीह द्वारा दी गई आज्ञा में, प्रेरितों को परमेश्वर के महान नाम ''में'' बपतिस्मा लेने के लिए कहा गया था; पतरस की भाषा में उन्हें पापों की क्षमा '' के लिए'' बपतिस्मा लेने को कहा गया था। फिर इसमें किसे संदेह हो सकता है कि मन में उद्देश्य रखकर मसीह के सामने समर्पण करने वाला व्यज़्ति पिता-पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम ''में'' और पापों की क्षमा ''के लिए'' बपतिस्मा लेता है? सच्चाई यह है कि वह इनमें से एक ''में'' आए

बिना दूसरे ''में'' बपतिस्मा नहीं ले सकता। इन दोनों शब्दों के उद्देश्य मिलते जुलते हैं, परन्तु ''पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम में'' महान अर्थात व्यापक ईश्वरीय सम्बन्ध है जो बपतिस्मा लेने से मिलता है; इसमें उस सम्बन्ध में पाई जाने वाली सभी आशिषें शामिल हैं। पापों की क्षमा ''के लिए'' और उस ईश्वरीय सम्बन्ध में मिलने वाली दूसरी सब आशिषों ''में'' बपतिस्मा लिए बिना पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा में बपतिस्मा नहीं लिया जा सकता है। इसलिए, पिन्तेकुस्त के दिन पतरस ने हमारे प्रभु के हत्यारों से बात करते हुए जिनके मन इस विशेष पाप के लिए बड़े दुखी होकर व्याकुल थे और जो छुटकारे के लिए पुकार रहे थे, अपने-अपने पापों की क्षमा ''के लिए'' (*eis*) बपतिस्मा लेने को कहा। यही वह बात थी जिसकी वे प्रतीक्षा कर रहे थे, पुकार रहे थे, आहें भर रहे थे और जिसकी खोज में थे। पतरस ने उन्हें स्पष्ट उज़र दे दिया; परन्तु यदि उसने उन्हें ''पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से (या में)'' बपतिस्मा लेने के लिए कहा था, तो इस आज्ञा को मानने के लिए उनकी विनम्रता उन्हें पापों की क्षमा ''में'' ले आई होगी। ऐसी क्षमा उन आशिषों में से एक है जो उस ईश्वरीय सम्बन्ध में प्रभु में आने वालों को मिलती है।

इफिसुस में, पौलुस को बारह के करीब लोग मिले जिन्होंने ''यूहन्ना का बपतिस्मा लिया'' हुआ था (प्रेरितों 19:3), स्पष्टतया अब यह बपतिस्मा ईश्वरीय प्रबन्ध नहीं रहा था। यह बपतिस्मा लेने वालों को यह विश्वास करने के लिए सिखाया गया था कि यीशु आने वाला है; उन्हें उसकी प्रतीक्षा करने के लिए बपतिस्मा दिया गया था, जबकि वास्तव में वह पहले ही आ चुका था, मर गया था और इफिसुस में पौलुस के आने से कई साल पहले मुर्दों में से जी उठा था। इसी बात को सुनिश्चित करने के लिए उन्हें पापों की क्षमा ''के लिए'' बपतिस्मा दिया गया था, ज़्योंकि यूहन्ना का बपतिस्मा ''क्षमा के लिए मन फिराव का बपतिस्मा'' था। परन्तु उन्होंने आने वाले प्रभु में विश्वास करके बपतिस्मा लिया था, जबकि यह क्रूस पर चढ़ाए और जी उठे प्रभु में होना चाहिए था। वे मसीह के सुसमाचार के इन महान तथ्यों से अनजान थे ज़्योंकि उन्हें यह मालूम नहीं था कि वह तो ''इस्राएल को मन फिराव और पापों की क्षमा देने के लिए'' सचमुच का उद्धारकर्ज़ा बनने के लिए परमेश्वर के दाहिने हाथ उठा लिया गया था। इसलिए पौलुस ने उन्हें ये महान तथ्य बताकर उन्हें ''प्रभु यीशु के नाम का ["into"; *eis*] बपतिस्मा'' लेने के लिए कहा (प्रेरितों 19:5)।

ज़्या पौलुस ने इन लोगों को यरूशलेम में लगभग तीन हज़ार पश्चाज़ापी विश्वासियों को पतरस के उज़र से अलग बात की? ''[मसीह के अलावा] किसी दूसरे के द्वारा उद्धार सम्भव नहीं; ज़्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में कोई और दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें''(प्रेरितों 4:12)। पतरस ने लगभग तीन हज़ार लोगों को पापों की क्षमा ''के लिए'' ("into"; *eis*) बपतिस्मा लेने के लिए कहा; ज़्योंकि किसी दूसरे नाम में क्षमा या उद्धार नहीं है, इसलिए पतरस उन्हें उसी नाम में बपतिस्मा लेने के लिए कह रहा था जिस नाम से हमारा उद्धार होना है। उद्धार प्रभु यीशु के नाम ''में'' है न कि इसके ''बाहर,'' और न किसी दूसरे नाम ''में''। इन लोगों को बपतिस्मा दिया गया था ताकि वे उद्धार पाएं, जिसके लिए उनका मसीह ''में'' (के) होना ज़रूरी था।

मैं फिर से यह कहने की अनुमति चाहता हूं कि निष्कपट मन वाले लोगों को यहां पर अलग नहीं किया जा सकता है। यदि हम उस एकता को पाना चाहते हैं जिसके लिए यीशु ने प्रार्थना की थी तो हम किसी प्रकार की फूट को प्रोत्साहित नहीं कर सकते। मैं चाहता हूं कि विश्वासी, पश्चाज़ापी, टूटे हुए मन वाले और दुखी मन का व्यज़्ति पुकारकर आत्मा के शज़्दों का इस्तेमाल करे, ''हे प्रभु मैं ज़्या करूं?'' (प्रेरितों 22:10):

> पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा [लो] (मज़ी 28:19)।
>
> तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से [में] बपतिस्मा ले (प्रेरितों 2:38)।
>
> प्रज़ु यीशु के नाम से [में] बपतिस्मा [लो] (प्रेरितों 19:5)।
>
> उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर पापों को धो डाल (प्रेरितों 22:16)।

यह जोखिम उठाकर कि वह आत्मा के स्पष्ट निर्देशों को समझ लेगा, मैं इन बातों को उसके सामने उसे स्वयं समझने के लिए व्याज़्या के बिना छोड़ देना चाहता हूं।

ज़्या आप डरते हैं कि ''में'' ("into" या "unto") शज़्द की व्याज़्या के बिना आपकी डिनोमिनेशन या कलीसिया को कठिनाई होगी? यदि परमेश्वर की पुस्तक की बातों को मानने के लिए साज़्प्रदायिक कलीसिया की शिक्षा को छोड़ना पड़े तो ज़्या आप उस शिक्षा को छोड़ने के लिए तैयार होंगे? ज़्या आप केवल मसीही बनकर संतुष्ट हैं अर्थात साज़्प्रदायिक कलीसिया या डिनोमिनेशन का नाम जोड़े बिना संतुष्ट हैं? ज़्या गलीली यीशु के पीछे चलने वाले होना ही काफी नहीं है? ज़्योंकि नये नियम के समय कोई साज़्प्रदायिक मसीही नहीं था, इसलिए ज़्या आप बाइबल में से इसका कोई कारण बता सकते हैं कि आज ऐसा होना ज़्यों आवश्यक है?

साज़्प्रदायिक कलीसियाएं बनाने से हमारे उद्धारकर्ज़ा की प्रार्थना हमेशा के लिए व्यर्थ हो जाती है कि उस पर विश्वास करने वाले सब लोग वैसे ही एक हों जैसे वह और पिता एक हैं (यूहन्ना 17:11)। हमारा प्रभु बिनती करता है कि हमारे बीच कोई फूट न हो, बल्कि हम सब एक ही बात कहें और उससे एक मन और एक चिज़ होकर पूरी तरह से मिले रहें (1 कुरिन्थियों 1:10)। जब तक हम में ऐसी फूट पाई जाती है तब तक उसकी आज्ञा को पूरा नहीं किया जा सकता। मसीह की खातिर आप केवल मसीही ज़्यों नहीं बन जाते?